

# हिंदी ग्रंथ



### *Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library*

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library has been created with the approval and personal blessings of Sri Satguru Uday Singh Ji. You can easily access the wealth of teaching, learning and research materials on Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library online, which until now have only been available to a handful of scholars and researchers.

This new Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library allows school children, students, researchers and armchair scholars anywhere in the world at any time to study and learn from the original documents.

As well as opening access to our historical pieces of world heritage, digitisation ensures the long-term protection and conservation of these fragile treasures. This is a significant milestone in the development of the Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library, but it is just a first step on a long road.

Please join with us in this remarkable transformation of the Library. You can share your books, magazines, pamphlets, photos, music, videos etc. This will ensure they are preserved for generations to come. Each item will be fully acknowledged.

#### **To continue this work, we need your help**

Your generous contribution and help will ensure that an ever-growing number of the Library's collections are conserved and digitised, and are made available to students, scholars, and readers the world over. The Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library collection is growing day by day and some rare and priceless books/magazines/manuscripts and other items have already been digitised.

We would like to thank all the contributors who have kindly provided items from their collections. This is appreciated by us now and many readers in the future.

#### **Contact Details**

For further information - please contact

Email: [NamdhariElibrary@gmail.com](mailto:NamdhariElibrary@gmail.com)

235  
 वाईप्रलकौ दूजाहनेषासः जवासननी  
 तरेमेहकरनिर्नानेगीषासः अ पित  
 सी ६ ई पिप्पल्यवांसलोचननीस  
 पाल दुगाणईनतैवासाउल अंठिला  
 ईचीमुथकुहारा टंकसमेहोएभीचाप  
 कनीयोफकीचटएजोगी माव्यासेती  
 दीजोत्रोगी ईरूपीछासीपितकीओर  
 काहूपित इतवेहर्तापंडितेजेरुगीन  
 देगित अ श्रेष्ठा स उ ई गंधक



सेतीतां वामने। ईश्वरी त्रिगुण त्रिक  
 दातृने। पहमाव्योसेती गोने। तिनति  
 नरती गोली लेठे। दोदो दीजो कारण नोगी  
 तिनति नदीजो कारण नोगी। ईश्वरी पां  
 स्त्री जन्म की श्रेष्ठ प्रदेन स्वास। इतने हर्ष  
 पंडितो जो को गोली व्यास। अ क स्त्री  
 का पा : फलि घत रेखा ठहिरावे  
 तिसके जीतन लें ए मिलावे। वानो वानी  
 ऐक जलावे। अंतन तिसके लें ए मिलावे॥

सातवस्तुमें लस्ये लेघने मधनकपाणि  
 पलकने मर्च कुलकुमपिप्पला मूल  
 मर्क पुष्पैकरकरा मजी मूल एतलोह  
 कीलेले पूता समकरसजहूपीपलसीता ॥  
 दो रा चानयमकाषलुकरगोलीन  
 रीपोमास ईहतासकलीवाई कौंध  
 सीडौरमास म रा के । मुनरे  
 दवैदकेवचक्षण दपीरोगकेपंचोत  
 दण्ड हर्षज्वरसेतीखासीहोवे हृदेष्टु



चदेहा बोवे मीनदिसनो जनघोटा मने  
हेतु कने न सधा टा कने सोनाले भिगी कव  
नाके समकल इसके पीप हस्पाने बांछे  
पुजी आनती तो ह देहे ही जो सा चत मे लु  
इसी लकी दाई रोग का प्री उेर स्वास  
उमो गी न देने जनना वकरी दूधे भासः  
जांदाई रोग का वलु घरे म्रुपि ठन सके  
हुठ तिस रोगी की जानी योगो रे जीतर  
हुठि विष्णु लवा सलोचन का पूर दुग

इसतेंलेहुमनूर सामकरसिलाजीतमला  
 चे। कनेईकटावर्तुनलो मात्रादीजे  
 भाव्यासेती इनोलेसीवाईयेती ईस्पं  
 हतींदाईरोगमज्जुप्रमेह उषधतु  
 लनमसुकेदं टोपुमहेय अ थि अ स  
 का वेदाहिविज्जकरनिर्वाण चेप्रक  
 नकाहैअतीसाना किसहंपेतीकिसहंवा  
 ई किसहंरुक्तादुतेजाई आदिमेव  
 तेवर्तकरावे यधिपाचदुपप्पपलखे



पाचेडौषद्वंद्वकदीजो कुडाजवासाध  
नीयां विल दीजो ~~क~~ कस्तुरियोटिह  
दे न सिंघीठतीपित्तदोगप्रतिदीजो  
परवाई जोदीजो विपरवाईने तौदीजो  
सुंठिल्लाई जेडुनजानेदोगकाप्रसामे  
नेजानेपथ्य मुनरेचैदमूर्खवैदकेसंज  
लठहोहय पुनः घरेपोलघनीयार  
लक्ष्मकरखंडुरलावो नाल्पसोपप  
स्त्रीरक्षणार्थे चावलघावनसंशयि



लावे। ईस्थी हती अती सार क्या पित क्य  
 वाई जेजे दुपचा मे पय का तो संग्रहि ए  
 जी जाई पुनः दीजे साखंडु न सपाहु  
 मनी न चावे नोगी मंगः पुनः दीजे पो  
 सा भोजन सुखंडु अती सार कौ पावे बंध  
 पुनः दीजे पोसा सुखंडु कंग। अती सार  
 कर ठाने हासा तंधी दीजे साखंडु सुम  
 त दीजे पोसा नी संग पयन दीजे सुपने जे  
 खेई न नोगी मंगः पुनः सुठिन स्यादपे

१३

ਸਤੁ ਤਤੁ ਜਾਨਾਨਾ ਆਗੈ ਵਰਤਾਵਾਯਾ ਹਿੰਗੁਰੁ  
ਨਪਾਂਧੀ ਮਠੇ ਸਿਖ ਚਰਖੇ ਬਾਹਰ ਆਗੈ ਆਲਾਇ  
ਅਤੀਸਾਨ ਆਗੈ ਵੈਦਾਨਿਖ ਆਗੈ ਨਿਰੀਸ  
ਗੁਰਮ ਪਾਂਚ ਸੰਗੁ ਹਿੰਗੁਰੁ ਆਗੈ ਜਲਵਤੀ ਸੁ  
ਪ੍ਰਾਪੁ ਹਕ ਅਨਾਰ ਸੁਠਿ ਕੁਛਿ ਆਗੈ ਆਗੈ  
ਨ ਸਮਾਨੁ ਸਮਾਨੁ ਹਿੰਗੁਰੁ ਆਗੈ ਪੀਸਾ ਸਾ  
ਘੋਸਾ ਧਨ ਲਾਵੇ ਸਾ ਆਗੈ ਆਗੈ ਸੰਗ ਆਗੈ  
ਵੇ ਲਾਗੈ ਮੁਖ ਤਾਂ ਆਗੈ ਪਿਲਾਵੇ ਦੇ ਰਾ  
ਲਾਗੈ ਸੰਗੁ ਹਿੰਗੁਰੁ ਆਗੈ ਜੇ ਸਾਂਤ ਪਥਾ



नतदेहः त्रेदनजानेदेनकातो। औषधकह  
 कवे पुनः त्रिगुणसिफलपुष्कलमूल। ची  
 ताचवकजवायनरुममूल देतातोलीजोदे  
 दोतोहः श्रद्धागुडसेधसीयोचोहः मात्र  
 मेहोकीनरघोहः जुगरोचोडेधनेराहः ल  
 हनजुवेनाबुठोके पाषेभदकीजाउचु  
 याके त्रिसदिनमात्रा औषधदेहो हतीसं  
 गृहिणीसकोरेहो दो रा हतीषास्ती  
 नोगकौशासमनुषमनुमूल औषधीहती

१४

बहुदोगको औषध का पहिल मूल ऐह्यम  
 के नाम ऐह्यम मूलम है अनेद संग्र  
 एंगी को सावे वेद ईन दघा की जट को म्र  
 व सामकर धाल की नर की ज्ञान् धालि  
 म्रव म्रना लनेन युग लक दायी दल्ली घे  
 न चावल ठीर नुह जने धाल पतिलनी  
 मेलम लव देना ल म्र वा गो का पाई॥  
 पहिलानो गी म्र उकरा वो पाछे औषध  
 तिनेष लवो चवक म्र उगी दनी पांजी॥



गीबलकनवे। पाधेखेबधतिसेबल  
 वे। पीपलसुठिनिउंशीनर्क। तगरमुख  
 नरकेसरप्रर्क। बांधेपुडीमकपउधंर  
 दोदीजेरोगपधन इत्येहर्तास्वान  
 अनुषांसी। कहीमोहमतिजंनोहासी ॐ  
 रजीहर्तानहत्मेगजेदीजोमाधेवासाध॥  
 पाधेपथप्रपथकीजोकनीयोवैदस  
 जाल म कि नो का क्रिमरोगकी  
 मुनो कहानी रैनमोवैमुखप्रावेपानी॥

जागति जिह्वा अघ्न सुकावे चेटे हिनदा  
अनुज्ज्वल गावे आन के वीला पे टचल  
नो षटी छा छे संग पिलावि दो रा  
हती मकले नो ग के एर उोष धसन सिध  
उोष दबंग कपाक ले जो वे दन होवे बुझा  
पुनः आन विउंग पिसा बो निका गज  
के सर उौर मुन का माषो से ती वांछे  
गाली दो दो टंके होने तोली ईक ई  
क गाली नित्य षवावे कि मरोग की



जउ छिठ जावे पनः मुद्रा संसु अतु धिलु  
 मिनार मजी जने निर्म कठान अमम  
 वे का अर्थ नोय का सुनें नमन कहि  
 तमने सी लोक सृजन किस हं कम कि  
 सहं लोक किस हं गुदा से जावे पाक कि  
 सहं ससहे प्र किम हं वाई किम हं न क्तग  
 दा तै जाई त्वार च कित सा जं न अ नूप  
 कय ए वं धन ठे व छ छूप घृणी से  
 ता प्या जु तु चा ग ज जंग इम ती नों कै

१८

कूटनिकंग को हे टोये मक नषावे  
अपरनोगी नो वै ठवे जव बहुता धूपा  
इसका जगहि बनी पुखे ठा नो जाई उ  
परनोगी नो वै ठाई अरु नो गाका कर्ता  
नासा जव बहुता धूपा गुद भै जासा  
परिहा नोगी लै वै ठावे पग उपर सिर  
हेठर कराने पाछे रूं मी गुद भै लावे  
जव आवे बाहर तातुर्त कटवे दोर  
कटिन की विध कहि जे को उजाने जे दु॥

पाछे ईस कर्म के तो अधिक से न घेद के  
 उनु वकी जमे नुषा जे की कर हो ई  
 निगदें दूष पखिल मंजु लुका के मिव  
 ता पुटि मंगावो पुष्प ने घेता दधेक  
 पडे छले सी लावे मे लोधागे लक वंधा  
 वे गुन ईस्का देव प्रायतावे अति उच्छ  
 के अर्म सुकावे पुनः गाव मज्ज मै लउ  
 पकावो जब होई बुधनीया चं ई सु  
 कावो पाछे दुग्ग मूर्ति लीजे मे लि

१५



ईकठानिकाकीजो गेहरीगोटकेसाथ  
 बंधानो मायाधामसेसंगविहावो दो  
 ह्या हर्तमहोश्रुत्समीकोवाइकोमतिदी  
 जोउमपिततत पितरुपरदीजीसी रे  
 तहडोषघनिस अ वि च रोगका॥  
 होईअपघीसमजनखीवै तिसको  
 रोगविश्वकाघावो लघनकहं  
 विश्वकनाहो जेवैदविद्यामोसमं  
 होउमावाणाकहीयेनंअप्रतीमा

होता होता घटि विनाश आदोष भैव  
 न कदा को भेद न भेद न भेद न भेद  
 चै जै फलिमा धर्मो के भेद न भेद न भेद  
 सको एते जै फलिमा धर्मो के भेद न भेद  
 ले से ली मली के लिं डी इस्थी न रपर  
 जाइ रिखूची। राखो छा मनासी तम  
 ची अ प्र ह्का वचन धनंत वलि छे  
 वृषान वी सजात का प्रमे ह्प धान  
 कित्त ह्प प्र कित्त ह्वाइ कित्त ह्प

२.

तपितनसैं जाई जिसको वैद्वनको छिक्च  
वे त्रिफलाहलसी मोघजडधार दुग्ग  
इस्के घनी आठका आठ्यासे तीकरी  
योगोली होवे जैसा फलुहन नोली  
केसहंपोरी कि संहसावी दीजी गोहरी  
करी यो कानी इहहती सकल प्रमेहि  
कोई समैं नाही फेरु विषिनें वाला क  
करे जोहि दे होई अंधे पुनः त्रिफ  
ला मिला जीतज वासा समकन ईन



केह जे वांसा कुटि घंटा एकरि फकी क  
 सीयो जीतर के घेवासन घरीयो मात्र  
 दी जे पांती संग हर्ष नोग सुष प्राण  
 द अंग हर्ष मधु परमेव के जिस परम  
 बीजात हकी म दुर्वेश क कने जु वे दन  
 बूजे वात पुनः अजया घनीयां महिदी  
 जीना सिला राग्रा म लेखी ज कतीना  
 आधु आधु सिव सा ही कनीयो कोरे  
 वासन जीतर घरीयो पोस्त मिं बलते

२९

षेसाप्य दोदोसिनसाहीबंडभिला  
वो साप्यप्रनंपानतिसेषहावो प्र  
मेहसुपेदाहादुसुपीत इस्थीहर्त  
सुनरेसीत म्र द त के केउपाई  
जवअंगदिलीघनंतरपुछे डौषध  
लिषयामूत्रकछे बीरेबीजदनीअं  
जर्षिघार दुग्नाइसप्यीकेसूगालमे  
हईकठाफकीकीजे सात्राघाचेरु  
मेदीजे इसप्यीसिस्वरजाईदषूत

कहो मोहमन करीयो पूता उरनी  
 ह्नीवहुनो गकुं कनमधनीरेतु देव  
 हकीमक्याकनैवेद्वहेइसवेत म  
 मू ने का गोषमवासाह्मजम्रान  
 पाषाणनेदकदीयालनीजान काय  
 जुपीयेसहितमिह्लाई मन्त्रोद्यधिंन  
 मालीजाई मयसूपाकका राखजवा  
 साजलमैनेवे जवहेइनिपंगतातव  
 नोगिकौंदेये समकईरूपीमिष्टी  
 मावे सजावैलुफीजदोकटवे म

२३



थ प च ने का जिसमामसकौपचनी  
 होवै मृतकतंतारिसरनोवै मलमल  
 पेउमृतनिकारो मृतपत्नीतरमोतनून  
 हो जैसादुखहुआकहंतीशोदा कर  
 देपचनीजोदाजोदा जिसपचनीतोव  
 दुदुषुदीया हुसरोगपी मृतकपीया  
 तीजिनिकेवहतकरवि पानीकहसेस  
 गापिलावे पचनीकाईहकर्तनासु॥  
 जातिनिरोगीवहतेवास दुर्वशाहकी  
 मजोवदसमरूपे ईसपीरहेतचीरनि

कहे ॥ श्री ची विद्य चीरोपयनी ॥  
 रघार ॥ हा ॥ उपमनससवहार ॥ निने  
 सतरटके प्रसीये ॥ पावे टिकी निम  
 की धनीये ॥ तिसपाचे महमलावे ॥ च  
 ले प्रजरोगगवावे ॥ इसचे रतादेग ॥  
 पथनी कर्ता नाम ॥ पय्या पय्या पय्यानी  
 डोजे जीवन लोडे ॥ आस ॥ अथ ॥ डी ॥ ॥ ॥  
 शौरावे वदणी रे वीज ॥ समकर सनह  
 मिश्री लीज ॥ मैदा कर सिलु वदे साय ॥

चंशएंगंकपउधरकरहाय चंपलिवो  
 जीतरबूज सनकुचहुसकेहुपनपूर  
 चारपहिरनीषावित्रेह मर्यहिसके  
 मंदरमेहु लोकेहुवावेइतरबूज॥  
 जमदेमदेहोवेचरपज जोकोषावेइ  
 सेनिहिर इहोषधकहियेइडीज  
 उ इरपीहलबहुतनोगपयरीमरि  
 परमेह हकीमदेवप्राक्याकलेजो  
 वेदनजानेनेदु॥ म घा पु का



हृषाकप्रनालेधरस्रागे गोकेडुधकिच  
बाधपकागे। सपेद्रुजवरहेकप्रना॥  
गाजरबीजहीजियोपूरा। तिसकेसाप्रक  
रधंडुमिलाने। घूपनधरीये घाईसुका  
वे। अर्द्धसिंगम्रुविंदुकुशाद दोहफते  
केजावेवाद स ते का। लोंगलाईची  
जाफहिलेह दाहचंफनीजहवत्रीदेह॥  
नेजावालाससकनउहा सनकराईक  
ठाप्रधकनाल टंकवनेवरफकीकनवारे॥

पाचेमधुकेकाठपिठावे ईस्थीहर्तावतु  
 तनोगयेहडौषधपत्रसिध हंसीमदर्वे  
 क्याकमेजुवैदतलेवेबुझा ॐ म म  
 नौलका वातदिनांमेवहुतामृतुमल  
 सलकहीयोईसकोप्रत जोकोषावेई  
 सेनहार सलसलबोलनहोवेवारः  
 तिलगुडगिनीविदाम औषदसलस  
 लिईस्कानांम ॐ न नो का म्रघ  
 निनोगवघावेपापे म्रघघटाईऊठावे

तापे महिलानोगकनावैबोनः नोजन  
 पावेबाहुहोन नकसिंकनी नौउका  
 मैलकनावै मर्वी नो नोपीघावो ई  
 हर्तावहुदोगको प्रथम नो म चंगा  
 हावै इससपीजे दिनबहुवैसाई प्रथ  
 म्मा रे का आठनोगकामुनोमुजाई॥  
 किताहंपेतीकिसहूवाई प्रसवेआडव  
 घावेआउ आडवचाईघटावेहिंगा  
 पाछेईमकेहोहूकरावे पय्यापय्य



समस्तपुत्रावे पुनः कीडाहाकमको  
जकहे जंगहिचमठेवनकहे अच  
मां का बधिमामेसुनहेलुदण  
कहितकदेमरसेवचचए वाहरसे  
तअरुअंतनरुधमा पलपंहरसेअध  
रिअरुसमना पाघनदेकरजंगडका  
वे पाघेइस्येयादीनविलुचि जिनके  
नीतरजारेपानी नांमजलोदनति  
स्काजंगनी घेदेहुदुनिकालोनीम॥

ओषध ईस्का सुन होनी ना सफेद  
 जे होई सफेद ही जे प्यो मा मा प्यो  
 ती करीयो मो मा प्यो स म ज के प प्य  
 पुलावै जो व र ग च क र ग ल गा वै ॥ ३ ॥  
 ॐ नं वा का दर्द शर हं की म व र्षा वै  
 वात ल द म सु नी यो प प्या घात गुं गी  
 न स ना वात न ज वै दू जा द ग डी नु जं  
 सु का वै दे ते ओष द र ह न क री यो  
 ति त्र चा र दि न प हिला ज री यो ल म्पु न

१५

अंठिपुष्करमूति देवदान्मज्जमेदायस्व  
 मूति जेकोईस्काकाटापीवे सर्ववाई  
 पीचंगापीवे दयामूलकान् शालप  
 एीअनुजपुअयुमकदाईमास अक  
 रिकराअनुचितदापीपहमूलपचान्  
 एस्वएीअनुमुप्रालेकचदावरलेदु  
 एहडोवधदत्तमूलकाअर्धमंगपरि  
 देलअ वा का गुडलसुनकेसाध  
 भिलाने पोडीपुंठीमेहकुटावे।

नाईरोगयहिकर्तनांस जगदिनरोग  
 बहुतेधास अफिसा का का उन्न  
 दिवाईकालचएरेका रोगीनेहेजेस  
 तैसा करहंनेनेकरहंभावे करहंलेटे  
 करहंनावे करहंनूषाकरहंरसं प  
 लपलजाविसुखदीनसना चढेसुद  
 पस्कोटचलावे करहंलसकरहोकि  
 इनवे करहंवे देकरहंजागे करहं  
 रोगीकरहंजागे रक्तिनिकालरनेच

२८



नकनीयो॥ ओषधधीदिनयोडेजरीयो  
रूपगहफेअनप्रकफेचोवे॥ सिंहके  
गीचंगाहोवे॥ विपलपुलकचिष्टुहरे  
रेहओषधसममेहोचोवि॥ सुखप्रजि  
मोदावहजवायए॥ सूरनेतिलजिला  
वेकरीयोचूरु॥ मात्रालेपरनातधि  
हावे॥ छिन्नादोगकीजडाकजावे॥  
अंजनकस्तुगर्मेनसरावर॥ पंडितजान  
लिईनकीसार॥ जानीदेहीवहुतिवि

कारी यंत्री मंत्री कनी सो कारी दे र  
दुर्ग शाह की म विष्णु नाम ने सि प्रा ने  
लोक जे को चमड़े प्रा स सुष र्ण पंडित  
होगु ई क प म ई क म स क नो हि ष नो  
मरी यो सु ड़ा ते ही पंडित मानी ये स म  
जे वा चे वु ड़ा दुहि नै नां ते ई क हो ई हो ते  
दो नो ज्ञा न ऐ से पंडित दे वी ये के ते कि  
जे सं सार म वा का पा ई ल स  
न सं वी पु ल क र मू हि म म गंध ज गाय

२६

एकीपलमल। समकनसमहंगुगलि  
लीजे। मेहईकठानिकाकीजे। चदूनीतर  
मेहकुटावो। पाधिनेमनसमजपुल  
वो। दो। रा। रेहिलीवाइरोगअरुगंध  
नाईसत्रिपात। ओरनीहतीजानीयेमु  
षनंगअरुपदाघातु। अ। ते। वा। क।  
संठी। लसुनपीपलमल। सोरेकोईप  
लुअंकाफल। दोदोनालेरेसनलीजे।  
मेहईकठानिकाकीजे। दमरोपा

एमनि सायचडावे ॥ अर्धाईलेतेलमं  
 ने ॥ डाहकडाहीफेसककने ॥ पानीध  
 टेतातेलकडावे ॥ सीवहलेईतांकप  
 पावे ॥ वाईरोगकेअंगामहावा ॥ दुर्वश  
 हकीमचधानेईसा ॥ मूर्खवैदतुजेवय  
 केसा ॥ अ ॥ मु ॥ प्र ॥ का ॥ जबमुखनंगी  
 उपज्रावे ॥ माहपकेवउपकाईबवावे  
 मासपरेवत्रिपथपुलावे ॥ निसदिनि  
 दर्पएहेदिधलावे ॥ बाहतीतैलजुमु

३०



वेमहावे॥ त्रिकुटाजाफलदांतचवं  
वे॥ कहितहंकिमसुजोवेपंडुत॥ नावेरे  
दये॥ औषधधुव॥ ॐ॥ वाई॥ अ  
मवाईजबलिगी॥ अवे॥ गुदे॥ अरुजंघम  
धउषावे॥ पाछेपानऐनडुकोतेहु॥ इध  
केसंगदीजोवहिमेंल॥ पाछेहृष्यनदी  
रषहाने॥ जोटमिठापघचढावे॥  
अथवा॥ का॥ हु॥ अर्कधतरामुंठिह  
फीम॥ ऐनडुकवाईकेहंकीम॥ औनकु

ठहरमलमेहु आघईस्यीकब्रवातेहु  
 समकरसजहंमंनेंकीजे मेहुईकय  
 निकाकीजे अलफजहीईसेपकावे  
 मोतेवलेअंगमलने दुर्गेशहकीमपहि  
 बुद्धिसुनाई मलतेतंजाकनीयोआई  
 दे। २॥ जोलागंठीआपीउगाईसीच  
 एसकलेजाई तवहर्तचौनासीउज  
 वयहिअंगमलआई ॥ ३ ॥ आ दे का  
 वर्चकचूरअंगमोदविधाना ॥ लखनसुं

३॥

ठिते देव उदावा जति च व क ज वा ई ए ची  
ता सकहे सम म र ह जो मी ता बू ए गु  
उ के साथ मि ही जो मा ज्ञा पा नी संग बु  
ह ग ने दो रा ई स्यी ह ती म रोग म  
न सा च छि प ड व कान रे हा डे वि ज मे दे  
त ज सो दा का न्द ॥ म कु जो का ज व  
न क्त वि का री हो वे दे हा ॥ ठु हो घ फ ड ज द  
दे हा ॥ अ व ए नी सो ज प क वि मंगे छि म ने  
गि यी स न्दो संगे व क्त नि का ह वि

चन करीये ॐ सदा धी दिन के तेजरी  
 ये तिल सों कुंठि मूखे दीजे वे सनने  
 टी जोग न करीये इसी कुंठ पुनरनि  
 जाई जा दिन रोगी चाली कई पुनः  
 नमः श्रीर के सनिसपाल चारों कीं लक  
 टिहुनाल जो को डुपी बेरे हला पु ई स  
 नोग थी राखो नाथ सिर सग्रं व वेर नि  
 म्र के टाल इन चारों कीं धाला डग्रा ली  
 ले सन पंथु मिलावे चट्टनी तर मेल कु

३३३  
 ली



टाको ॥ कने कुआ चरवोगी दीछो  
वैदा अंदर प्रोचन हीजे ॥ इच्छी हतार  
करो मजे को दुखाने लाई ॥ न तमात का  
पाह कुव वचन दुबल जाई ॥ अथ मेतदा  
मकर ॥ अवदे ह प्रदर होवे लाग ॥ तिस भा  
न सको मेते दाग ॥ पर पल्लि रोग वधा  
हो वधाना होवे ॥ सुन सुन वात नोगीने  
वे ॥ न तनिका ह विने चन करी डो ॥ डोष  
दृष्टी दिन चो डुजरी डो ॥ डोचन चो कुन

दीजोगवाण लेहसुहगातेकचहंए  
 सज्जीफयकडीतेसंमहए। इनसज  
 नोंकातेहसुहगातेकचहंए। इनसज  
 पकावे। ऐनदिनाईकचहंए। उ  
 चरथोकननोगगिषावे। दुर्वेशहंकीम  
 यष्टिादसुनावे। इत्तेनोगपुनातनज  
 वे। अ. वि. नो. का. विसमानसकौं  
 होवे। छीप। मूलीवीजकनीजो। छीप।  
 छाछे। संगपीसपकावे। दंचकसुहगा

३३

सायमिलावे इन्धीयिं मापुतातन  
जावे डे दिन महुतुतातीन्हावे चदन  
सायचो महेहता इसागंधीरायेव  
ता अ पाई जिसमानसकौं होवै पछि  
परेबिनसतीतकोनाउ डेसनके  
पुपासब ठावे नेछन डुसवेसायन  
षावे तारेभीनेतेहमंगावे मनबिह  
मेतीलेबंघावे जवचोउ घुआजलि  
मैपावे तौलेडुसकौं संगमहावे

इसी पाउ पुस्तक न जाई जदि न उगी  
 ह्ये हं व पुन वेष गंधक टुं क र्क  
 पात्रा पावने न क न न न न न न न  
 अल क उ ही त लु पा तां ते प म पु दे ही म ह ॥  
 इसी पाउ पुस्तक न जाई न न न न न  
 म जे व उ न न न न न स स फे का  
 जे क न न न न न न न न न न न न न  
 क न क च म न न न न न न न न न न  
 ल न न न न न न न न न न न न न

३५

तगप्रमकवीलावे ऐनीकच्चावर्मप  
 कावे जेकोनिहटेउनेंहावे ऐनीक  
 चावर्मपकावे जेसेउकाचावर्मपका  
 पाहाहोमूलीवीरसमाया जेहा  
 नेकमलीक्यान पोउसईसेनहावे  
 वार पहिलावांघेहेदसमात नम  
 सनीतरहेनदाह देवप्राहकीमसु  
 नावेदाउ मसमलाईछोडावे घंडु  
 मद्रिष्टके जोटिकीवांघपकावेपिठ॥



तिनको कहिते वैदक किष्कः सधनक  
 हभ्रदबे केरे जोगरफा पासो सिषन  
 चेरे माने निमः किष्कः सधनक  
 तरसासेषावे पहापहा घाडुवधेनाहे  
 वे सुनसुच कलंगीरोवे कचाहे  
 इतां जो कंफ्लावे पकाहे इतां चीरकर  
 वे किफहे पानी नित धुलावे पाछे रि  
 की निम्र वंधावे तांते पाछे महि  
 मलावे किंगरफ केरी महमवनन

२५

बो। औषधमहलमका। ईकईकईरंभी  
निर्नेलावा। सिंगरफककयुकनीहारा  
ह। योउमो। मरहसकोनाह। महलम  
गोकेषीपकाको। नहिाधोथानचि  
मिहाको। उपरघाहुधुहाइचगावो।  
कपडेसेतीहोपहगावो। फोउाघाउ  
प्रह्वदपुनजागंदननासूर। ईसके  
आगेपंडितो। जंनेासकहेचूर। अ  
ति। र। गका। तिप्रसोगको। अंजन

हो ॥ तैंगा सम कर सुर्मा दे हो ॥ चोडी  
 विष्णु लज्जु सुमेमी दू ॥ ककरी के सरन  
 चकजीन ॥ तिसी तिसु सुस्तन जाई  
 जादि नव हुते रे मी पाई ॥ जो विफलगे  
 लीनित पलाने ॥ काहे संजुन प्राप्ता पा  
 वे ॥ स ॥ चै ॥ ने ॥ का ॥ तो हज्जु सुपा  
 छै विंम ॥ महिदी सम कर करी यो कं  
 म ॥ धनो कज्ज कर पानी डाह ॥ वा  
 रधार दो मुकी डाह ॥ इस्के पाछे धरी

३६

योप्यातु पीपलजटा निंबूरसचातु  
सतदिनसायकटेनेबर्हावे पाचे  
नोगीआखोलखेईसीखेउपुरात  
नजाई जोदिननेमीवहुतेपाई अथ  
मो आदुका मेनहेणगीसुनीयो  
वाता पांनीतेहतेहंहीमाता चौथेते  
हपछांनो जेत मोतीयां विंदुईहा  
हीहोत जबगंदापांनीआखनो जावे  
जिउंयेाडीवदलीदिनपक्कावे मे

ताहोतौ कानन की जै नीलाहोतौ न  
 मन लीजै कछुहोतौ डोष दहाहो  
 पनेसुख मलयागले बांधेपटी  
 तातुषवावे सांतिपद पायेपटीछो  
 लाने। अपफोहा रोग का मय कडीके  
 सरकुंगुं मुंटी। समकन मिश्री वंचनसुं  
 टी। ईक अंजनूपी सबनावो। मात्रा  
 उम्के अंवीपावे। देव शह की मसुना  
 वेवोहा। ईस्यी जात पुनातन फोला।

३०



प्रतां सीतला हे वे फो हल। सुखी करी  
यो दाहा टो हल। जे हो दूचि वि अ प्राषो  
बावो। सीतला फो हल सुखत गवावो॥ॐ  
यस बल नोग का॥ स बल रोग की सुने  
कहानी॥ रक्त नेत्र दृष्टि प्रावे पानी॥ म  
न छि ल संख के नर संग विष्टी॥ आ  
धी ईश्वरी हे वे भिष्टी॥ जे को ईश्वर अं  
जनु पावे॥ सब ल रोग की छांडा कटा  
वे॥ पाछे रख कंता सारी॥ जा ही जा

ईकदबोनाडी मर लेका कहति  
 जसो दाम्भुनलोका नृपिसमंशेनेन  
 तरतानं हेतुनेपीकसियेपीसी  
 मुंगवपीपलपुष्टेपसी नवतुनपि  
 सलेप्रापेपंसी शेषपुष्टकमेवो जे  
 नी मयसिनीअका सिनपीडाका  
 सुनेविचार दूषतकननेअसिना  
 ना जेनकिचिहसंगलोवेपीडा प्रक  
 नीकालचनवावोनीडा जेपितकहेअ

३८

सिंहातु सीतल उषध माये लाहु  
घन्तीया महिदी हे पुधरावो पांतीये  
समंगल गावो घन्तीया चंदन काद  
पिलावो ईश्वरी देतां छिन्न चलावो  
जो नैन न देषो कफ वेकाव पिपल पस  
गष लावो सार सुठी पुहकर माये ला  
वो बहले नो गीव मन कदावो जेने नो  
अदर होवे राई लोषण उमके पे नो न  
ई दिन पो डारा ती होई वधे न होला

कारवैदोडा लोह्य अथ दंत पीडाका ॥  
 जेवाईको दुषपावे दंत ना सुषदिनेन  
 ना तीसांत अकर मत्त जीरे पीमावे  
 आदी ईश्या मर्च मिलावे कच हंसेवे  
 दांतो मलीये तैन दिनां ले दांतुन दही  
 पो सीतल उषद मलीये नित जेजा  
 ने दंत विकारी नत जे हलून दांत ते होवे  
 पीडा मिसी लाई चवावे वीडा जे हो  
 वै कीडा दांतो अंदर चह्या ताहे मुजंतन

१५

मंतर मिठीनसुखांमेदीजे। अर्क  
 जउंकीदंलनूकीजे। अथसुदजंगक  
 सेछाचवकजमद्रिपिबुटा। अथर  
 करससोंवाधोमुदिका। किमह्राध  
 किमह्राध। जउंननरवेदसमीतह  
 मान। सुदजंगवोगयहिजतौनोस  
 डेचमयोकुनवोगाधाम। पुनः मदी  
 वधिकुलाजललीजे। आद्रकरससोंमे  
 लकरिजे। कोकनवेनाचरषावेः



गलासाथनागरनगावे अरुचिमी  
 का। केसरकालीहोगानकचिकरपी  
 गोरएयकसुनषयनकसुपी आक  
 दुधकोकमेउमन। मिमिज्जदेप्रहन  
 मगर। ईस्पीहरी। जनायेमिर्दीके  
 रीपीर। ईस्पीरहेतापंडते। घण्डधु  
 ठावोसीर। जाफलकेसरहौ। महफी  
 म। कचहापुठी। जालहकीम। वमन  
 विनेचनपाछे। ईनकीचालीज

५३

ने वैदु विघवा पुन वैदन करीयो अ  
वा होई तो पूहन करीयो अथ प्रवरोग  
का पको प्रकृति चले कने एणी हो  
ती प्रवये जो त विहारी पंडितो अ  
र का वाहुली होला तेहन करीयो  
टिली कानो ए हो तेहु कमावे रती  
पातिका न डुलावे औ मली ई सके डौ  
षद बहुते सकहे डौ षद वैदन कह  
ते जे प्रवये होवे की डौ पादामे ल

नकर्तापीडा बलेनपठतिहिरदेह्यई  
 कामेवैदपचानतिवाई हिंगुलामा  
 रुवाईविउंगु ठाल्लकंनूसीयोसं  
 ग जेतुमैमायरीमेहोकांन औषधि  
 ऐजीलीजोमंन ॐ ॐ ॐ ॐ गका  
 मिठादोहीग्रायोतन्त्रंग्रत तेहच  
 लावेकनीयोचूर धतूरासायजुला  
 वेधूर ईश्वरीपीडाघंटीयादूरः  
 पाचेईसकेषाईविदाम औषधि

ॐ

गद्य जीवाइस्का नांगु प्रथनासंगे  
 गका उमका जने वक्तु निकीना ओष  
 घलुका सुनी मो नीना जेदे ही जान  
 तिनक्त विकारी मक्तु निकालु दीजानि  
 सवानी दीजे पुतन रजना ना केरी  
 वचक साय भिल विगेरी वकरी इ  
 धे संग प्रिलु को भेलो सने कान च  
 उने काची मिटी सी प्रलि पावे  
 टंज वाहां घुल घावे दों हका

कलहिलिषावेपंडुते पशुकनेसमम  
 ई हकीमनिचादान्याकनेजेवैदन  
 ब्रजेदाई अथपीनसका जेचाहो  
 पीनसकोगाम्पयम नामीउलोही  
 उपक्रायगुग्गुमहिदीसाम्पकावे  
 नातदिनाईकगानीसावे पुनः च  
 पनचनेचनसत्रकर्म देवोपडतई  
 सकेसर्मे अथजुकासका जिसर्मे  
 नसकोलारेठंरु कुट्टकहैंजीवि

४४



घागंध विफलासिर्केसाथपकावे ॥  
निस्सदिननोगीकोंसिंवावे ॥ जुंठीचोम  
सिकोल्हकीम ॥ बटीअडकपांणीकनी  
यो ॥ ईकईकटकेओलीकनीयो ॥ दोला ॥  
जोकोषावेईसकोगमीकरेजोग ॥ नम  
हावाईईहरेनामकरतारोग ॥ अथन  
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
लसुनाव ॥ तोडसुपारीकाईम  
लिचाव ॥ मैदाघासनडोरपुहरे ॥

इस धीमे ने कनो क्षिमा ने निर्मगो के इ  
 धेतग आठ वर्ष की होवे लग अथ कुवतक ॥  
 सुठी त्रिफला चीनी दारु चिजान पुडा ले  
 हपकाउ और संज्ञा लहे हषी होई सम  
 कन गुजमौ गोली होई जे कोषा वेई से  
 नदार नाम देई सई होवे तुषी आनु जे  
 कोई कवर्ष त किषाई बूढा पेतर होवे जु  
 वाई इस धी हत आउ से और कनं तमो  
 गि देह सुधार के कल हो और चटा वे सो ॥

३५

अथनुसका॥ नाईवलूजनाईएतुदाल  
 होहागुज्जमुपत्रपीपल॥ होलननुस  
 नाथउठावे॥ पाछेपानेनातपकावेः॥  
 ईस्यीनुसुपुनातमजाई॥ जेनोजनव  
 कूलसेगावाई॥ अ॥ वा॥ कि॥ गकाः॥  
 चरपटिपूछेऐकवधूटे॥ वमनविनेच  
 नसो॥ जउतूटे॥ ईसंयीहोवादीफिरंगि  
 वकरीदूछेनोजनसंग॥ वादफिरंगने  
 कहिताउंग॥ नूषघटावेकालांगु॥

पहिले रोग कक वेच मन जो जुन बांवे  
 वाळू वण मिर्चा लें सातो लाक प्र  
 काष्ठ रज कनी यो चरु नीला जुन संगई  
 सब गो लु सा प्रक संनी संग अलौ उ  
 गो लु ई न की वे चो हसये । प्राद पि नें ग  
 को क कान सये गो लु ई प्र व वि प्रा वे  
 पाणी से ती क्षि त छु छ वा वे । ई न दि न्ना  
 में वा वे ली क । ई से न्ना ही र ती ये क जी न  
 मुख आ ने ताले लु जु वा सा गो लु ई कने

४६

नजानो हासा ॥ पथ्य पथ्य की कने मंता ॥  
 लुवा दफि नंग को देहु निकल दोहरा ॥  
 हता सकले वाद को अग्र रहु छनलागे अंग ॥  
 ग ॥ पथ्या पथ्य पथ्य चंणी योई रहे वाद ॥  
 पितंग पुनः ॥ कोच लवी जजवाई ए ॥  
 बुना सज्ज ॥ पावाती नूहे हृद समाज ॥  
 गोके मूत्र विचर्य लै कनावे ॥ छेउत ॥  
 वज्र वनं मुव टावे ॥ आग गोली ईस्य ॥  
 मेलो ॥ छेउ ईक ईक दिन में खेले ॥



जलवा पाछे इसके काढे बोल गोली  
दीजो साथत मोल दोहरा हरतामही  
गई के डोर ले प्रसूत पहला दोगा पछे  
नीछ पाछे दीजो प्रसूत अथंता बाभार ए  
विध गंधक से तीता बाभारो संधिक  
तोला पतर बाभो पतर गंधक साथ रल  
को आठ पहर की आग जलवा ऐत वि  
होवे आवे सीतल पतर नाख गुलावे नी  
तर दो दिन बीच गुलावे होवन पाछे गो

केदहियेघोवन ऐकवर्सधीसीतलहेने  
ईकसतसीकीसबहिकोवे ईकईकनती  
दीनोंनोगी दोदोरतीदीजेनोगीः सा  
पअनूपनजेकोबावे सकलनोगकी  
जगकछोवे अथलेखनानमारणविद्य  
कहितहकीमहिदेमैमान तोहो कबउ  
याहेलोहोमान कोवेवासननजीतनधर  
यो वासनलेपचूलेलेधरीयो आ  
ठपहिनकीआगजहावे। चनसमान

दीप की ईसे छहिन गो इस्थीमत (उ  
 ठानो अडोल रोगी दीजो सायत मे  
 ल अथगंधक मार एविध गंधक म  
 रुई घाला ॥ मए घल से तीकां घक म  
 ला इस्थीते लुचुवाई अडोल रती दी  
 जो सायत मोलु देलक इस्थीत रत  
 ई रोग घांसी ओर सुयास ठी पछ से ती  
 मल के निरें रोगी घास अथसाद म  
 एविध कहित जमै दासुनी योका नह ॥

पान न मंत्र लेक दो सुहान सुर की घेडे  
प्रत मंगावो उस के अंरु समाव धरा के  
जिम दिन पाछे षेह राखु पानी डाहो  
कदर दाख पाछे इसी टिकी करीये  
दिकी जाडे नीत रधरीये आठ पहिर  
की आग जलावो सीत लहेई तन क  
छमं गावो पाछे मंगलते सीत लहेवो  
साथ प्रजु पान नोगी देवो दोहरा  
इस्यी हरत दायी रोग पित क संतान

॥ चंगो होवे पंगते जो दिन बहुते धाम ॥  
 अथ चंवल के उपाई वाकरी पवठरी  
 ज तिलचूरी रहल दलहलद मोयू  
 कुठ चरै कर कोउ ते लनि चपा छेण  
 ता पाछे धाघ गो की विच मलएण चं  
 वल हलि चघर पुन कजार् अथ दंत  
 पीडा को चंवे के पात लोघ्र पानी का  
 थ कर कुवली करे पुनः हिंगुवेर की  
 गिनी जवाईए कुठ सेधा कपुपान

नारंग। चने के पाउस साथ बलुने  
गो। ली। चने प्रमाण। दती घस ली पीडा  
जाई। घन। जूनाई को पिची होवे पीडा  
संग सुदिने नराती सात अरु कन।  
ली ले पीसावे। सादी इस ची मरच मि  
लावे। जब हसे वे दातो मलीये। नैन दि  
ना की दातुन कीजे। सीत लुडो घ घ म  
लीयो नित। जे जाने दातव का नीरति।।  
जे हलन दात ता होवे पीडा। असि लाई



चना वी वी ७ जे होवे पी ७ दा तो संद नि  
 वहिजा तार हेतु मंत्र मंत्र कर मिठी व सुन  
 बाए दी जो अरक जंग की दांत न की जो  
 अथ चक्र पी का हलद टंका पंहुं के  
 घटु टंका १६ मिह्राई खाई अथ घर्लिका  
 पलास की छिल सुकाई करवासी पाए  
 नाल पीवे अथ स्त्री जनी का कमीसि  
 जुई कली का चोटली देत उसे कहोई  
 अथ दंदा अथ कषा अथ छाया सितरे

हृदय आवले १ पवाउवीज २ बटण कदि  
 दाहा अथ फेहेका समुद्र फलिकी  
 सोच समंजनुकरे अथ धुंधका अर्च  
 भीस सहत सोंकांसी विच निंमकी ल  
 कडीनाल अथ छाईका ईद्राणी के  
 फलिय हि हृद मे ल रहे दिने पानी सों  
 घसलावे राती सोवेता मुख धै ई ठाले  
 पुनः अं व वेल का म सहा गावे छाई जाई ॥  
 कुली कुल दूधुलावे छाई जाई अथ नमस्तका ॥

१८, जीवरादका पुः अतीसः दः दधगंगा धरचूर्न  
 नीहेक लघुगंगा धरः अतीसः को का पुः चूर्नः गोतीस  
 दितीसः अतीसः संगुहः काई अतुचः मलः का पु  
 सीकः अतीसः चूर्नः अतीसः मवेसीः नगदरः का उषद  
 लमः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः  
 दालः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः  
 मिसः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः  
 औषः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः  
 लोः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः  
 एः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः अतीसः

॥ १ ॥ अथ वेले ॥ पवाउवीज २ वट्टे ॥  
 ॥ २ ॥ अथ फेलेका समुद्र फल ॥  
 ॥ ३ ॥ सोधसमंजनुकरे अथ धुंधका  
 ॥ ४ ॥ मीससहतसेंकांसी विचमिमकी वाइलका  
 ॥ ५ ॥ कडीनाल अथ घाईका ईडाणी दसेन ॥  
 ॥ ६ ॥ फलियहिल्लदमेलरछेदिनेपानी  
 ॥ ७ ॥ घसलावेरातीसेवेतामुखदोई वाइलका  
 ॥ ८ ॥ पुनः अंवेलेकामरसलगावेघाई अथ पित्त  
 ॥ ९ ॥ कुलीकूदधुलावेघाईजाई अथ न

- १९ कीपरादकापुः श्रुतीसारः दधंगंगाधरचूर्न  
 २० लडुगंगाधरः श्रुतीसारको कापुः चूर्नः गोलीप्र  
 २१ श्रुतीसारः संग्रहिणीनाई उरुचः मलको कापु  
 २२ मवेसीको चूर्नः श्रीमवेसीः नगदरको औषद  
 २३ नगदरः गुल्मः आमवातः विपत्ताचूर्नः  
 २४ आमवातको चूर्नः क्रिमरोगको चूर्नः  
 २५ मूत्ररोगः विस्त्रवकाः मूत्रको चूर्नः  
 २६ उदररोगको चूर्नः पांडुकामलवाईको औषद  
 २७ प्रजनरोगकोः दारिद्र्यको चूर्नः  
 २८ हिडकीकोः चूर्नः श्मदीरोगको औषद  
 २९ स्वासः कासः वादी कीर्णः गोलीः  
 ३० प्रदागनः पुष्पांतरः गुटकाः चूर्नः  
 ३१ विस्त्रवकाः कुंडुवाईः सुंडः प्रमेहः मूत्रद्वार

३५ मूत्ररोगः पथरीकोक्तायु चूतनः

३६ मृगीरोगकोनासः कुष्ठरोगको चूतनः

३७ मनिषादक्तायः स्वेतकुष्ठको हृत्पथः

३८ स्वेतपागः रुडुः श्रामरोगको हृत्पथः मर्दन

३९ हृत्पथको हृत्पथः चिमरोगको हृत्पथः

४० नादवा रोगः अश्रुघाता वातः वाईको चूतनः

४१ वाईको कृष्णः वाईश्रुतः तेलुवाईको चूतनः

४२ वाईसर्वः पित्तः दाहः अरुणः नादको

४३ कफको चूतनः काचवा रोगः गंगालः अश्रुघाता

४४ मुखपथकोः रक्तपातकोः मुखपथको

४५ कीलकाः घर्दकोः पीनसः अश्रुघाता

४६ नेत्ररोगः अजनः नात्रायेको अजन



विदुके सो दास पुन यन सुषे ऐं विरचते ॥  
 विषमनोत्सवे नाडी पनीचा वात पित्त क  
 फ वर्ननां साधक साध लघन काल चक्र  
 वर्ननां प्रपम समुदेस दोहरा हिडकी व  
 टिग्रहि मूर शस्त्रास कास अतीसार वि  
 तवा ईक फरि विधि ज्वर ईन का कहै विचा  
 रा ॥ अथ पित्त ज्वर लक्षण मूर्च्छा हृत्वा  
 प्रलाप पुन मिश्रोदति नू मवित नेत्र दा  
 हि कटुता वदन रेल लघन ज्वर पित्त ॥  
 अथ कफ ज्वर के लक्षण दोहरा कास

चक्षुषो माचक्षुषेऽनुनिद्रासीत् ॥ वम  
 नम्रमचक्षुषमधुनताकफज्वरलक्षण  
 ता ॥ ४५ ॥ अथवा ईतरलक्षण ॥ दोहना  
 किरकडूरोमाचक्षुषसीतिकंपजंजाई  
 मोहकिचलजुकषायमुषुऐलछनज  
 नवाई ॥ ४६ ॥ अथमलज्वरलक्षण ॥ दोहर  
 आस्थपीउपलायनमुदाहसोषप्रव  
 पि ॥ कस्योत्सुवैदविचारकेऐलछनम  
 हिताप ॥ ४७ ॥ अथजीर्णज्वरलक्षण  
 दोहना ॥ वमनविरोचनउद्वहदुष्वबहुउ

नीर है जाना लखनर सज्जन के कहौ दे  
 षष्ठ्य सुपकार ४३ अथ सेह ज्वर लख  
 ने निद्रा जंच सिद्ध कुनत न होई संग पसे  
 द कहौ सुवैद विचार को ऐ लखन जुन  
 वेद ४४ अथ दृष्ट ज्वर लखनो कोहरा  
 ने द्रव्य सुपकार तत न उदर पां ऊस ज्ञां  
 ग ऐ लखन ज्वर दिष्ट के कहौ सुधं प  
 जुसंग ४५ अथ का लखन लखन सी  
 सुतपति पत्र से दुतन कर पद सीत लख  
 ई ऐ लखन ज्वर काल के तिसै उपाई न

कोई ॥ ४५ ॥ अथ ज्वर पत्र पत्र अथ वधिवर्नने  
 दोहरा ॥ अथ वासूर मित पित की कफ दाद  
 से परमान् सप्तदिशि प्रामित वाई की ज्वर  
 पर पत्र वधिवर्नने ॥ ४६ ॥ अथ ज्वर मुख लक्षण  
 दोहरा ॥ शिव नेतृ परसे डत न देही लघुता  
 नाम ॥ मुख पाके न दुर्गुणता ईह लक्षण  
 ज्वर नाम ॥ ४७ ॥ अथ लघु मुख मित लिखते  
 चौपई ॥ मुख कटाई पुहवन मूल ॥ केकेडि  
 से भी कडु मर मुख ही गिले ईले  
 आवारे ॥ कोह लघु यणी हल ध पी पने ॥ ४८ ॥

विष्णुमिर्वाकलौजीकी हजु मानपितपा  
 प्रजापत्रचुप्रान अंगधस्वंपसाकुडा  
 मिहार्ई लोचनवाला मर्वा पाई तजु  
 मतीस मुबंदा कुठान मुषपपटेह  
 जनांनअंन वित्राअजयापीपनम  
 ईओषदमेलसजतुह पजईपाहीनि  
 नाईताजं अजओषधतेअधमअन  
 इनओषदकेअधमएकना तासस  
 दर्मनहधुताधने ५६ तपतनीन

ज्योतिषी जै घाला ॥ आठौ ज्वरन मसहत  
 काला ॥ सहे मोहत दान रहई ॥ पंडुओ  
 का मला जहाई ॥ मरा ॥ ही वागंदि तख  
 मूल मज जाई ॥ मन पात तेर हिन रह  
 ई ॥ रोग प्रने कन मसहित ॥ जाई त वै  
 न कवै ॥ शर कहो वषाजा ॥ अथ अने न  
 म ॥ दोहरा ॥ सुठि पस्वि अरु पीपरे  
 टिके अठ पर भानि ॥ गंध कवि लु



पादादकहो टंक दोई हे ठां म ॥ ५ ॥  
 बीज धतले टांक दोई पी सो ह ठोष व  
 सिई रस म्रद नक सौं म्रद दीये गु रस  
 गुज हि वोई ॥ ५ ॥ गो ही धावे प्रात उठि  
 रस म्रद नक सौं धातु तब तक धावा  
 म्रको न सै एत तक ॥ ५ ॥ रजा तीज  
 नित को चो चाई ज्वर जाई स्वप्न विष  
 मज्जु मी तज्वर उदर माधन रहाई ॥ ५ ॥  
 महो जुरं कसना मकहु सूत्रे ते पति स्रान ॥

वैदमनोयचग्रंथमैनाषाकहोवधं  
नामपुत्रयमिद्विज्जाकसयोहा  
सीपजसमहताहममसटेरुकरे  
हिविचारमीलाचोपाटकवैतिनपु  
टदेहभिलाईकयमापपओषदस  
मटमेचवोहताकोगजपुटदेहप्र  
हिनदोईपार्यकरवोमीतलुहोईनु  
होहइ. गुंजादेसुप्रममगुरुषु  
उमोदोजेमोइ. घडुनामपय

दीजीयेनाससर्वज्वरहोई॥६१॥कह्यो  
 मुनंकमचर्कमतिपंडितुहेतुविचारना  
 सेतापमनेकविद्यसिद्धप्रगटसंसार॥६२॥  
 अथज्वरकागुट्का॥देहा॥पीपरमन  
 सहनीयफलिनसुजुकरेहेपाई॥मेह  
 कीजेप्रातर्षट्ज्वरविदोषमिद्व्याई॥६३॥  
 अथपित्तज्वरकेभूर्ण॥सोडठा॥मिति  
 पापडा॥अज्ञजहसोपीजेप्रातर्षट्ठा  
 टंकरोईपुनमाणदाहपित्तज्वरहोई॥६४॥

अथ दाहज्वरको चरन चौपई लोचन  
वाला मोथा ज्ञान चंदन पितपाप उठ  
न सुठि सुमीरनीर से लेहु दाह पितजर  
नाम सकनेहु अथ कफज्वरको नाम काह  
ज्ञान ग्रंथानु मोला सुठि प्रचक्र मुक  
ई फलु पीपर ताहु मिलाई नाम जुली  
जे नीर सौं कफ ज्वर छिन मै जाई ६६  
अथ वाई ज्वरको चरण से मडा सुठि  
सौं चर पाई पीपर मरि चकिताई ता

कुठिपिचारलाई चूक है जुवात ज्वर ॥ ६७ ॥  
 अथ मलज्वर के कापु सोरठा गंधक  
 प्रदुक्त नीय मल मोषा कडु हरीतकी ॥ ६८ ॥  
 कापत त्रका लसत ज्वर रुक के ना सने ॥ ६९ ॥  
 अथ ज्वर नस मल का दोहरा अजमेर  
 मोहरीत की सौ चनता हरीतकी सीसपी  
 इजहत पत सो न सज्वर छिन में जाई ॥ ७० ॥  
 अथ षेफ ज्वर के उपाई दोहरा मर्चि  
 की जै अंग के तेल हिलन को लाई पुन

मज्जनजलतपतसै। वेदुताममिदज्ज  
 ई ७० अथदिष्टज्वरकोचूर्ण देहा  
 पीपनमसिचिनाइतासुठिहिंगुसमघ  
 ल। चूर्णनवावैटककोलापदिष्टकोट  
 ल ७१ अथपित्तकफकाइज्वरकोचूर्ण  
 न देहा। मोष्यासुठिचिनाइतापित्त  
 पापडाजान। पीपनकडुगिलोईफुनि  
 ऐममपीसौअंन ७२ ईल्वूर्नसुप्रह  
 लकहिजलसे। पीजेप्रात अंनतपित्त



मर्दन की धौंती न दिन न रात सु सुने गरहि  
 पाई गुंजा सम गोली करहु प्रात उठन  
 विषाई ॥ ८५ ॥ दो. संनृपात नीतंगक  
 पहिम ज्वर वेला गोई मंदाग निहुं दमा  
 द्रव्य मुसते रोग भिद्यई ॥ ८६ ॥ स्रय स्रय  
 दस मूल बाहु संनृपात को देहनाः ॥  
 दो. च्छनीयां मोच्य चिराई ताक उंई दि  
 जहुं जान देव दनु अस मूल सुं छिन्न  
 जप पीपन म्रान ॥ ८७ ॥ कायु जु कर के पी  
 जई संनृपात ज्वर जाई तरु मोह प्रला

पकमुक्तमसासकासमिच्छाई ॥ ८८ ॥  
 यसंनकेअंजनके विकुटाविफला  
 हंगुवनमेंछाकडुमिलाई पीलीसम  
 नोंसमसफरयेडोषसमनाई ॥ ८९ ॥  
 अजाअसौपीसकैकरअंजननयन  
 लाअगिरोमहुनमादसमसप्रपति  
 नरहाई ॥ ९० ॥ दोहा ॥ तिमअधनिसने  
 गुमनिनूतदोषसिखवत वैदसुव  
 होविचारकेएतेकरैविवर्ति ॥ ९१ ॥ अथ

पीपरादिका धुसंत्रपातने॥ पीपरा  
 लचिनाईतासुठीताहमिलाई॥ कायु  
 जुकरकेपीजीयेसंत्रपातज्वरजाई॥  
 ५३ अथअतीसारकोचकिट्ठा॥ लील  
 वतीबटी॥ चौ॥ अर्चमस्तकीदाउमकली  
 लोचनबांशांभगुदली॥ लोचनरह  
 टीमाईघाईमाजफलसुमेचनमिप  
 ई॥ कुजजारफलकीकरफूलिकयुवि  
 नागप्रवरममतलि॥ ऐसलौषधसाग

जुचार। पेठेनीजगिरीतनघार ५६  
 पोसतजहसोंगोलीकीजे। एकमेक  
 पदमंगलघरीजे। तंदुलजलमोंपीजे  
 अंगन। तांकोगुनकोलकेवषान। उद  
 नमठापयुदेतास। अतीसारसपुम  
 ईनमस ५७। अथबद्धिगंगाधरचूर्न  
 अतीपसारके। चों। मोयाअरलमुठि  
 मिलाई। पत्तीसमोचनसुअंगनरलाई।  
 लो। धूलजालआई। दार। कुआपठि

२३ जौ पार्ई ॥ २८ ॥ ले नवन वासा पुनम धु  
 पार्ई तंदुल जल में पीछे मिलार्ई ॥ भठ  
 नातु मधु पाछे लेखु अती सादु धिन  
 हयं नेह ॥ २९ ॥ अथ हल धुगंगा घर नून  
 दो ॥ लुठि घातु नीमि चर सुअज मोडा  
 सुमिलार्ई पीस धाध में पीजीये अ  
 ती सागर जुन साई ॥ ३० ॥ अथ अती पिसा  
 को लेपु दो ॥ आम वीज अरु जार्ई फल  
 अवर हफीम सुधा लज्ज में लेप नि

नाचपरश्रुतीसारकोटल ॥ अथनम  
गदिकापुनरश्रुतीमानको ॥ दो ॥ मोच  
गिलाईचिनाईलासुंठीकुजपतीस ॥ अ  
बजागजलकायनमिश्रुतीसारजुनफ  
सा ॥ अथनमश्रुतीसारकोटल ॥ चौ  
लेचनराताकुजपतीस ॥ मुयावेलि  
जुसमसविपीस ॥ इनकोकापुनर  
मिलाई ॥ सुनतेश्रुतीसारजुनजाई ॥ ३  
अथश्रुतीसारकोटिका ॥ दोहरा  
लोचई ॥ जे ॥ मोचनसुमुयावेलसुघाई ॥



गुटिका दीजे वेर सम अती सार भिटाई  
 ३ अथ अती सार को चुरण दो मेघा  
 सौ चरहिं गुवि चि शिवा पती समि लाई  
 पीस पीजे जल तपत सौं अम अती सम  
 भिटाई ५ अथ संग्रहिणी योग च कित्त  
 पुत्र पंचक कायु दो धनी यु सुदि पु  
 निनाहा विल कथु घात कायु जु क रि  
 ने पीजई संग्रहिणी कहु टात ६ अथ  
 संग्रहणी वाई मूल को चुरे चै ७ अथ  
 सुदि गिलाई पती स ॥ तपत नीर सौ पी

जेपीसः अममनुचसंग्रहणीजाई नाई  
 मलचिनमंहनसाई ॥ अथममम  
 नुचसंग्रहिणीकोक्कापु गाईनचंद  
 पेढोलभोचलजलभोचोविलुसंठि  
 सुपावहै। छनीपापतिसें गिहोईवा  
 लाकुजाछाईमिलावहे समपीसडै  
 षडक्कापुकीजेप्रातउठकरपीजीये  
 मममनुचमलिसंग्रहिणीनासकनीधि  
 ये। १० ॥ इतप्रीवैदमनोप्रपविम्वते

मंत्रपातप्रतिसादसंग्रहिणीदोगप्रति  
 काववर्नतेनाप्रवितीयसामुदेयः १०५  
 अथभवेसीदोगचकित्सासादगघ्नमता  
 सूरनवदी दो० एकमविचनिवसुठपु  
 नचिआआठप्रवंन सूरनवेगडमजाग  
 लेचूरनकरोसुखान ११० दो० दुगनले  
 हगुडपाईकेगोलीकरोट्यकडोई पेडु  
 अफनागुलमंगदनामभवेसीहोई १११  
 अथचूर्नभवेसीका दो० अरलकिज

इह्ये सुठिमें घामे लु चरन पी जैत त्त  
सों रोग मने सी देल ॥ १२ ॥ अथ बूनी मने सी  
कें छौ बंद सोरठा ॥ बडी इलाची आनि  
धुतिले गहि सों की जीये ॥ टकसात पर  
मान रक्त मने सी ना सहे ॥ १३ ॥ अथ मने  
सी मो चूदन दो ॥ मूरन वच मरु मूसली  
कुज सुठि सनाई ॥ सी सघा घ सो पी  
जीये रोग मने सी जाई ॥ १४ ॥ अथ जगद  
र रोग प्रतीकार ॥ दोहा ॥ दंती हलध

वरुणदेव पीसहु नीर मिली है। प्रातः  
 तिले पनन के रोग ग्रस्त हूँ विजाई ॥ १४ ॥ अथ  
 जगद्वेग प्रतीकार दो। सो घासुं ठिसु  
 दाद पुन बहि मल्लर सुविनोधि जाई प  
 घालाई के नाम जगद्वेग हरे ॥ १५ ॥ अथ  
 गुलम रोग प्रतीकार दंड मतत। दोहा  
 मोचन सो घासुं ठिहिं दुआद लेन पुन ज  
 न। अथ या पीपर अज मोदा विडंका मज ॥ १६ ॥  
 वरुण देहा इनको चूर्ण की जीयेषु

तसोषाईमिलीगोलीसलविस्त्र  
 चकाअनुअजीवनजाई॥८॥अथअं  
 मवातनेमचकितसा॥१॥सरसोसु  
 ठिसुहाजनाविसंघपदासुरदारः॥  
 काजीसोअहेपीयेसहविश्रचनिका॥  
 ॥५॥अथपिपहादिचूएअमवातके॥  
 कालअथातु॥वैपई॥पीपदपठकटा  
 ईजांन॥सुठिसुअजयाजनिअंन  
 मोथाचित्रापीपदमूलगजपीपद

भेलोसमभतुलि तपसिनीरसौ फीजेव  
 सः आगवातकवहनहीदीस ललम  
 दागनिनंगहिरहाई बांलीघासीचि  
 भेंजाई २१ अथप्राप्तवातकोचूर्णः  
 दोः सुठिविउंगहरफकीदेवदाउसु  
 भिलाई तपतछिदकसौकीजधिप्राम  
 काईनरहाई २२ अथप्राप्तनफनेव  
 रन योगप्रामतु दोः दालतवघरे  
 उपुनित्रिवीजउंगपतीस मरचईदि



जैसा न के ली जेस मकर पीस ३३ दो  
 सदा वास सो पी जिये जंगम वात बरहाई  
 पहि चर ए सु सु रास की ह योग सता मत  
 गाई २४ अथ अम वात को कायु दो  
 गूगल शिव पुन दल निभा मुगि होई  
 कायु पुन रुके सी जिये जंगम वात को  
 बोई २५ अथ क्रिम नोग प्रतीकार दो  
 से द्रा विवी विडंग पुन पी सो सम रुष  
 ये गा पत पुन पुन रुके पी जिये ना से क्र  
 म के रोग २६ अथ क्रम को चूरन ३३ दो

त्रिपल विदुषा त्रिरीवचनिपंचर्च देवाइ  
 यदि रजुडा सुमिनि उग सुन चूरन करे मि  
 लाई २० दो० घेनु भ्रज मै पाइ कै टंकती नि  
 परमान सप्रदिबमजव पीजी ये होई उद  
 रक्रम हान २८ अथ अल्लोग प्रतीकार  
 दो० सौचर पुहकर सुठि हिडु आनहुम मि  
 कर जाई पीस पीडो जलत पति मै न्प्रति ३  
 निष्प्रची जाई २८ अथ निष्प्रच का चरन  
 दो० पीवर मरचि सुठि हिडु मे घा जीरे दोई ॥

अजमोद जल तप तमो कव हं प्रल न होई ॥  
 प्रल विप्रव जाई ॥ २ ॥ अथ चरन प्रल के  
 मोन ठा तुवन पुहक प्रल लवन तीन ठा  
 रहि ॥ अमळा तां मे चर अजवा इन सु  
 विजगे सुन ॥ ३ ॥ मोन ठा टंक टंक पत्र  
 मान इह ओषध सम ली जीये त्रिनीती  
 न टंक जान ईन का चरन की जीये ॥ ३ ॥  
 तप तनीर मे पाई टंक दो ईनित पी जीये ॥  
 प्रल गुलम कफुज इश्राम वात अदि

भ्रमगदि ३३ मय चूरन स्रुलका को  
 पीपरसुंठरीतकी सौ चरत्रिनी समं  
 तपत उदक सौ पी जीयेना सप्रलको ज  
 ने ३४ चूरन उदर रोगको चौपई पंच  
 लवनत्रय धार सुठान मय चो पीपरि  
 चित्राश्रान जमशाक जमु मवन सुने  
 देह कमर चोटही गुने टंकरे कचूर  
 न जाई उदर रोगको ना चुकनारि ३५  
 पुनः चूरन उदर रोगको दो सुंठम

रत्नचक्रनुपीपदेमिलजितसुमित्राई  
 पीसपीठुजलतपतसैप्यह्नोगना  
 सहाई ३६ अथपांडुकमलुनाईरोगप्र  
 तीकाय दो. त्रिफलाकडुकिराईता  
 वात्रात्रिंनगलोई कापुसुपीजैसह  
 जसोनासुपांडुगदिहोई ३७ अथक  
 मलुगाईकोअवतेतु ॥ दो. होहचंन  
 त्रिफलाकडुदोनोवजनीचाल घृत  
 मधुसौजवचाटई कवल्वाईकोटा

ल ३८ अथ कामलना कोषोदलीये  
 फलियं फलसें पीसके कने पोदलीये  
 ग सीघनसकाचासकत्रिजईफोम  
 लामोग ४० अथदोगकेप्रजनजेम  
 लदसुआनेकरअजनमईनाहिक  
 मलवाईकोनासहोमसुरपयजाय  
 ई ४१ अथदईरोगप्रतीकार दोला  
 गंधकरुहिअरुपीपदेखंगसुमिश  
 सीपाई जलसें पीजे पीसकरदई





अथ हिउकी प्रतीकार दे० वि० ॥  
 धी हाथ पुन पीसहु दोनो पाई नास  
 जुही जै प्रात बुठ हिउकी वहुन आई ॥ ४५ ॥  
 अथ हिउकी को चूदन दे० मन्त्रा लौक  
 अनुसुठ पुन गरी वेर की घाल मधु में  
 दी जै पीस के हिउकी पी उटाल ॥ ४६ ॥  
 अथ हिउकी को घूहिए दे० मन सहि  
 हलधि जु अन के पी सो सम कर योग ॥  
 वदन जु धमनी ली जी पेना से हिउकी

१०॥ अथ चरद्वेगको प्रतीकार ॥  
 १॥ चंदन मोथ ईला ईची लाजा कंण  
 लनंग ॥ बेर गरीश्रु रुकन लफलु लसंका  
 लुके सुख सुप्रपंग ॥ ४५ ॥ मोरटा ॥ मधु  
 मिश्रीरु मिहार्ई प्रात उठ जव चाट  
 ये ॥ चरद्वेग मिहार्ई सिधयोग पं  
 उतरु लो ॥ ४६ ॥ अथ चरद्वेग अत्र वले ॥  
 सुंठिला जा सिता ला वंग कव लुवी जत्र  
 तुला ईची ॥ चाटु मध के संग धर दि

नोगकोनासवे ५ ॥ अथ स्वास रोग प्र  
 तीक र चौपई सुंठी पीपर ककड सि  
 पुहकर मूल क बूरल डंगी मोय्या मरच  
 तपत जलहेतु स्वासकासकोनासकरे ॥ ५१ ॥  
 अथ स्वासकासके बदन चंद्र कंडि  
 या नीपुहकर मूल जंघन वंसा सरु कु  
 थ सुंठ ठान ऐपी ससु पीछै तपति नी  
 र सो स्वासकास की जाई पीर ॥ ५२ ॥  
 अथ कास रोग प्रतीकार गोग्ही बंध की ॥

दो॥ ग॥ सुंठबहेडापीपदैककउमिंगी  
 जनु मुखमेगोहलीराखीयेहोईखंघ  
 कीहान॥४॥ अथगोहलीखंघकी॥ दो॥  
 चंसासुंठिपीपदैऐसमपीसोअंन॥  
 गोहलीकीजैसहजसोहोईखंघकीहंघ॥  
 प॥ बांसीघासीकेअचूरन॥ दो॥ बांसा  
 सुंठिपीपदैचवककटाईपाई पीडा  
 पीउजहलपतिसोबांसीघासीज  
 ई॥ ५॥ अथककीकामुकरुषांसीकी॥

दो ॥ कंचु बिषु कौडी मरचै जसु सिंहे  
 पंचतंजि प्रमान गोली मंगल मान  
 ननु कपुषा सी की हान ५७ अथ मंद  
 गन प्रतीकार ॥ दो ॥ पीपर त्रिगीहरी  
 तकी सुंठी सो चर्पाई तपति नीर सो पी  
 जीयै मंदगनिरुजाई ५८ अथ मं  
 दागन को चरना दो ॥ सेधा शिवा  
 सुपी परै तां महि वित्र कु घाल पीस  
 पी उजल तपत सौं मंदागनिरुजाई ५९ ॥

अथ द्वादश करगुटिका ॥ त्रिकुटात्रिफ  
 ल ॥ लै नहिउ ॥ अरु अजवाई नमेला ॥ स  
 भिगुडिगोली की जीये मंदागनी कहु  
 देल ॥ अथ चूरन मंदागन को ॥ चौ ॥ से  
 धाखो चूरवाई विउं ॥ त्रिकुटात्रिफल  
 त्रिगीतवंग ॥ चित्राहिउ ॥ अजवाई नगान  
 जीरे दोई वावदा आनु ॥ ६९ ॥ इन ठोष  
 दिकै चूरन कनौ ॥ तीन पुटिनी वकी ॥  
 नौ ॥ दंका दोई प्रात उठ पाई ॥ मंद अ

गनिचिनामंहीजई ६२ अथविश्वचक्र  
 मूलकोमनेलेहुवै. सेंघाकुटुचोकतिहि  
 तेल तपतिकरौचूनकोमेत नमपदुम  
 दैनउरोगेला ६४ इतश्रीविषमनोर्धकप  
 दफास्रवासासंदगनीविश्वचक्रानोगप्र  
 तीकात्रवर्ननंगनामचतुर्थसमुदेस ४६  
 अथकुंठवाइप्रतीकार दो. ज्जिसेंघा  
 हिउधनिकटिकतेलसोपकाई लेपसु  
 कीजेप्रातर्षुठअंडसोपजुमिटाई ६६



अथ अउरोग को चरन दो विफलान्न  
 न की जीये धेनु मूत्रा महि घाल प्रातस मे  
 जब पी जीये अउ सोप कहु टाल छे दो  
 ईरन तेल सुरि ठाल पुन पई घृत सो मंये  
 ग प्रात काल छिठ पी जीये ना मे अउ जे ३  
 ग अथ अरुचि को लेप दो जीवा रन  
 सुकुट पुन विच होवे न मिलाई कांजी मे  
 जब ले पीये अउ सोप मिट जाई ६८  
 अथ प्रमेह रोग प्रतीकार दो मृदु

मिलाजीतजवषानघरिजलनौपीसै  
 आन मूत्रकषप्रमेवकोनासईहंगे  
 जानु ७५ अथमूत्ररोधनप्रतीकार ये  
 मूत्रोविषा आनकैतांकोजलमहिमेह  
 नाजतलेजवलेपीयेमूत्ररोधकौरेलु  
 अथमूत्ररोधकौकायुः छंद गोखनुज  
 नोसाअमदजुआनु पषाएनेदजुकनी  
 आलजान यहिकायसुपीजैसरति  
 सौमेह सोमूत्ररोधकौदेहुबेल ७७

अथ मज्जनोगकोचरनु दो. त्रिफलासे  
 घागोषरुवीजकटाईखाई तपतिनीर  
 सोपीजीये मज्जनोदधनरहाई ७८ अथ प  
 थरीरोगप्रतीकार कंदसंग्रठातु दो. र  
 नंभुंठीगोषरुकापुकरुहसमजाई  
 पावहुगुडजवषुरपुनवातपथरीजन  
 रहाई ७९ अथ पथरीकोकापु दो. व  
 रनीअरलीगोषरुसुंठीहरदुमिलाई  
 अस्मजेदकनीयातसमसिग्रतुचासम

ज़ाई से० कायुमुयाकोहेतुमूत्रद्वय  
 मरुदानदुष ८० अथमज्जीरोगप्रतीकम्॥  
 पुहकनादिकायुमगुणनमादकपुवि  
 मचकाको० दो० पुहकरमूलविनाईताने  
 लीसुंठिकचूर दमहनदसुरदारवचमे  
 प्रापीपरमूर ८२ दो० अजयाकुटसर  
 मचिलुनीजैकायजुज्रान मगिरो  
 गउनमादकयनेगविष्चीहान ८३  
 अथनासमज्जीरोगको० दो० मरचैसे

हउमहिचिदिबसईकीसप्रमानः ज  
 लसेनामजुहीजियेहोईमगीकीठंन॥  
 ८४॥ अथमगीरोगकोरहंजीघटेतु दो  
 बंहीनसबचरुदिसुनसंवाहुलीघात॥  
 गोघृतिगहियहिमिघकरमगीडुन  
 मादहिटात॥ ८५॥ अथकुषरोगाप्रत  
 कारचौअफलाकासानिमुपदोल॥  
 भाईनगिलोईसुसमकरपीजैतोतः॥  
 ररचूनपीजैजलमैघातकुषरो

नसेततकाल ८६ अथ कुश्रोगको  
 पूरन गरिन धंद त्रिफला मजीठ गि  
 लोई कटु की निम्बु निम्बु सासु जाए हों ब  
 चदार हरद विउंग वांसा देवदारु मुत्रे  
 राहो समीप सतु चरन कुरु विधसे  
 पीली पेपानी मंग कुश्रोग उप  
 लज जैना सहोई कंडुंग ८७ अथ मं  
 जिष्ठा दिका थसा मंग धर मतातु वित  
 न लको दो मंजिष्ठा त्रिफला कउर  
 लनी निंबु गिलोई देवदारु वच पीसने

कापुनकी जै सोई ८८ दो-प्रात  
हउठरपी जीये वात न कन रहई  
अस्तकमं अह्यामते दिक्कु बभित  
ई ८९ अयस्वेतकु बभित लेप चौ-  
पेजा बिबु कुटुब चचीता ऐसमपीम  
भरेपीता लेपुजुकी जै कंजी आन  
स्वेतकु बभित मो धूवजान ९ अयस्वे  
तदागको लेप मनसल चित्रकु व  
वची वाडे जसमभित हाई काजीमंज



बलेपीयेस्वेतकुब्जनरहाई ५१ अथ  
 स्वेतदागकोंलेप दो० अग्रलजाल  
 अंजनकेलेपुजुकरहुनगाडाई स्वेतदा  
 गकीहानकेकहोवैदमतनारि अथ  
 कंडुकोचूरन दो० निंबवाक्कीफाल  
 इनदअरुआवलेवेरहाई पंचंतीनयो  
 तक्रसौंपीवतकंडुजाई ५२ अथ  
 भद्रागकोंलेप दो० अचैपुनसिउ  
 रंपकहौंमहवीघृतसोयोग मयने

५६

लेप जु की जीये जाई आम के रोग ५४  
 प्रथम लेप आम दन द विचर्व का को दो  
 गंधक चो क विउग पुन सिंगन फरुड  
 सुजात हरद पवार मंघूर पुन पीसे  
 समक निज्जान ५५ कनक निंदु लोह  
 लनम लेप हुई न हिमिल आई आम रोग  
 गज्जव चर्व का ऐते रोग न साई ५६  
 प्रथम आम रोग के लेप को गंधक  
 हरद मिले नीला चो पावा चची

मर्जुबो कनकताई सजते गुडगन पवार  
धदि ५७ कटुकतेल मै पाई मरदन की  
जैती नदिन महिषी गोवर नाई न  
मै पा म मने कविधः ५८ अते पपाद  
दकंडुको दो देव हनद म म पीस के  
ले पो जल म जोग पा म दन द म रुषि  
न स ग दिवा नामे इते रोंग ५९ अषि  
ले प ल ज को चौ चंदन कुठ संजाल  
पाई कनक मारवा ए स म ज्ञाई ले पु

जुकी जै जलमहि चाल लखि व धरा  
 धिन माह सु दाह १० - अथ विंमरोग  
 प्रतीकारु दो कदली पात कनका  
 करितां महि हृदि भिदाई लेपु जुकी  
 जै नीर सौं विंमरोग न रहई ११ अ  
 थ विंमरोग को हेंपु चौ चंदन हर  
 ताल कप्र ठान सुहागा प्रली बीज  
 आन जंजीरी रस सौ लेप जु लाई  
 विंमरोग धिन माही जाई विंमरोग

कोलेपु सो गंधकचंदनअंननिव  
 रससोलेपीये दिवससातपरभांन  
 पिंगमरोगकोनामसहे ३ अथनारवा  
 रोगप्रतीकार दो अड्डगाधसीपीक  
 दौदधसोपीजेसोई निजओषदपंडत  
 कलोनामनामवाहोई ४ अथश्रुघा  
 तकोलेप काकजंघकोमूलकुटिश  
 श्रुघाईमैमेलु पीअरक्तपत्रवाहपुन  
 नासैइनकोपेलु ५ इतश्रीवैद्यनोर्ष

तुनं उपरमे ह मूत्र क ध मूत्र रोग मठी कु  
 र कं उपाम दस द वि च र्च काल ति थिं मन  
 न वा ष ड् व र्ण नो ना म पं च म स म दे सः ५  
 म प ना ता प्र ती का र चं द म्र न ग ध कु ट  
 ति ल म्पा म ज्ञान स म तु ल्य षं डु मे ल  
 डु सु ज्ञान य हि डो षा दि ही जै धि त मि  
 लाई मौ चा त वा दि धि न मौ य हि जा ई ॥ ६  
 म्र प वा ई को चू र न चो ज ग मं जाल स  
 ग रा मुं डी त हि मि लाई चू र न की जै ट





काप्यसुषुमिजे प्रात उठनात पीडन हि  
 होई अथ हा घुविमगर्जतेल वाईको  
 चौ। मीठा तेह से नई कप्रान तुल्य  
 सत्रे कने भिलान गुजाविषु सुघ  
 त्रेने बीज टकसुपंचपंचसो ह्रीजे ॥ १॥  
 विघसुतेल कीजीये आन लघुवि  
 सगर्जतेल यई जानु मर्दन कीजे  
 देही लाई वातचौरासी जापनाई ॥ २॥  
 अथ नाई अकउ कौ औषद सो

आच्छातसुखनकुटिषीनकनोगोदुगाधसो  
 वाईसीतहडफुटनासेआकडजंगको १३  
 अपनपांदशंगगुगलसर्वनाईकोकदि  
 संग्रहातु दो. आलकुंगनीप्रासनंग  
 संगंधसुठगीहोई त्रिकीनषुडासोप  
 हडसुठिसितावरसोई १४ अजवाई  
 नमप्रपीसकेसमसमगुगलपाई  
 अर्धनागगोघीवसोटकरोईलेष  
 ई कपग्रहिरीघनयोदुषुसुवज

५५१०३२

सुखग्रहिवाई माडीजानूपादकेरेते  
 रोगनमाई १६ प्रपपितकोप्रतीकानु॥  
 चौ॥ इहम्बीरुप्ररुसीरठान आचरे  
 सुचयतुल्य ज्ञान ऐपीसजुपीजहुज  
 लानिलाई सोधतकोपधिजमहिज ३॥५७  
 दहिप्रियाकोलेपु दो वेरीपलवज्ज  
 नरेतंदुलधिडिसुरलाई जलसोले  
 पहुचननुगुदाघटथानरहाई  
 १८ प्रपछरदुनाकीकोचूर्नदो ॥

सनसभजानगुटका कीजिटंकहैः  
 लैरकायसौ देईअथनापचातुतसज  
 ल सुडीकायकरेप्रातसमैतिहृततधि  
 नै २७ गंडमाहवृणकुषअपचीगोला  
 ग्रथगदिभोहजइगीदरदुष्टअर्षदना  
 सैसससुन २८ अथशुषपकेकैंग्रुष  
 द दे-तोवाषीरईलाचीभोकपुनरु  
 इ शुषमैमेलेपीसकेरदनपाकन  
 नहई २९ अथरुदातकोडोषदः॥

दो-ससवासेको कसहितमिलमयुल्लस्य  
 दो-नेमोई प्रातल्लाटुमातदिनदंतव  
 ककोषोई ३० अथदंतकील्लनप्रवाह  
 कोषोषदो-वासामोयावयुसिति  
 ककुठपुनजान-लोचमंजोठमिल  
 हिकेपीसोसामकनअन ३१ उोषदि  
 सप्तसप्तपीसकेमुखमैमदोअनः॥  
 पीडाकीटप्रवाहुदुष्टनिमखवीचस  
 जहानअथउोषदमुखपकेके॥

त्रिफलादासगिहोईपुनपत्रवनेलीपा  
 ई कुरलीकीजैनीरसोंवदनपाकन  
 रहई ३४ अथकीलकाछोछद दो  
 मरसोंसेंघालोछवचरेडौषधसम  
 ठंज जलसौवदनजुलेपीयेकासकी  
 लकमान ३५ अथडौषधघाईको  
 दो अकरकराअरुअरुचसितमुरदा  
 संषसमंन बहेउसोजवलेपीयेस  
 षघाईकीहंन ३६ अथमुषघाई  
 नोलिप दो छलीनातिलस्यामपुनः

जीरा सव सों पीस पय मोल पुज जे  
 न के सुष घाई न हि दीस ३७ हो न ह  
 दे कु छ लो घ पुन ए छै घ दिस म माई  
 मिंद स मो ले पी ये सुष की घाई जाई ३८  
 मना स का योग प्रती काव दो दुर्व क  
 सु न ह की त की दा उ म फल व हाई सी  
 त नी र सों ना स दे र क ज ग म न मो ल  
 ई ३९ अ च छै घ पी न स छे हरि  
 सी स र र को दो सु ठि म र च ४०



दुपिषने गुजसौ दीजे आन पीसखेट  
 दसीस दुखनास ईने कौ जान ४०  
 अथपि जसको डोष छ दो अवलख  
 अरहसि परमि स अितति दे मेह नाले  
 रजवनी दसौ पीउ पीसने नेह ४१  
 अथनेत्र रोग प्रतीक दुःख तस वति  
 लौं नहरीत की गोरे हर कजि लाई जल  
 मो वुपर लेखिये ने की पीर मि द्यई  
 ४२ अंजन नेत्र रोग का कातक फल

अनुजस्तपुनमहिदीरमसेयोगेले  
 चनअजनीजीयेहेनैनकोरोगः ४४॥  
 अजतरम्रअंधको देः सुरमारजनी  
 सुगमनहिजातीनससुतबंध नयन  
 अजनुनीजीयेहेममलानिसअंध ४५॥  
 अथनम्रअंधकेअजने देः सावन  
 वेरुवालाकोतिलईकअजनेदेई  
 निमअंधाबहुदिननको तिलईकुअं  
 मूवहीनासकरेहु विह अंधयउम

लकोऽंशु मेघांशु कदिहलकोऽंशु  
 मथाहमैपाई कसरगडमंशु कनेने  
 जपीऽंशु मिटाई पुनः रगडाई दो. रस  
 वतसुधसुफटकडी नारी दुगाधमिल्लाई ॥  
 वं सथाहलरगडाई येने जपीऽंशु मिटाई ॥ ५५ ॥  
 मथमंशु जनमपल्लवाई को. को. पाया  
 जनु संगी सरी मोता माएक जंनु. ये  
 छे टंकई हिली जीयेई नकाई हपसं  
 नु. ५. दो. छिठ दंत मरुवा कत मरुवा

हृमिल्लार्ह त्रयत्रयकंटप्रमंजधरके  
 सपात्रमैघार्ह ५२ चेहृययसोपीर  
 केद्रिगमंजुनसुकरेहृमसरहवाइके  
 वसहेदुधनातपचदेई ५३ अथसव  
 लवाइकेमगउदे मतांतवमरु  
 जसुपुननीहस्योपात्रान सीपीच  
 नाफटकीसाक्षिदफेनसमंन ५३  
 कंसयालमेवगडीयेचुनगोकासुमि  
 लाई निसासुमंजमकीछीयेसकल

नाई बरहाई ५४ अथ पोटीनेत्रपीड  
 की दो जीनाकाहीफटकीत्रिफलासो  
 एपाई रसवतहालोहरदपुनहोघरपी  
 अभिलाई ५५ दो ऐडोषदिसममंत्रान  
 केकोपोटलीपीस सर्वपीडकोनम  
 हैनईकोनेरमदपीस ५६ अथमंत्रज  
 नतिमरफोलेकावाईक सुरमासेंध  
 सुंखसुनमनसलित्रिकुटात्रान क  
 तिकफलुअनुमिशानीसागरकेनममंजना॥१॥



अंजन घेही दुगधमोति भररोगनर  
होई॥ फोहा खोरा वाई फुन नयन की  
नलु भिटाई ५८ अथ करुणो गप्रतीक  
तु॥ दो॥ रेकल वीजति लपत्र रसकं  
नीच जेपाई बहुरा पीरा पूर्व दुख मेते  
रोगनमाई औषध कान रोग के दो  
अकपात मे लसन घटि प्रबल नं हो  
ई॥ ऐसा अंजनु जो करे बहुरा पीर न हो  
होई॥ अथ करुणो गके औषध दो

देवदारुचसुठपुनसेंधाशौ फलहा  
 ई अजामृतसेांतपकनकंजदथासु  
 भिद्यई ६१ अथसिरदोगप्रतीकपत्र  
 राइफिरवर्तिकोलेपयो देवदारुकुठ  
 कंजफलऐरंडतेलमिलाई कोरुमै  
 जरलेपकविनातसिरोवर्तिजई ६१  
 अथकफसिरवर्तिकोलेपचौ ऐरंडि  
 राईमैनकुठजान छउक्चकुठविघ  
 दाअन तपतनीरसौपीसोलाई॥  
 कफसिरवर्तततछिनमैजाई ६३ अथ



कं पतिमिरवर्तकोलेपु चंदनश्रीवा  
 कसेनदुंछपीजुआवने कचचवीजले  
 वेरवितसिरोवर्तनासहे अप्यहेपसि  
 वोनर्तमिदोअकौ। दो- कुठमरचक्र  
 कोईफलुऐनंडकीजहिघाल तपतनी  
 रसौलेपीयेनेसिरवर्तटाहा॥६५॥  
 पलेपमिरवर्तको दो- पीपरमरचह  
 नीतकीऐतीनोसमजाई काजीसेती  
 लेपकनिपीजसिरकीजाई ६६ अथ